IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

"मुगलकालीन शाही महिलाओं का सामाजिक व आर्थिक परिस्थिति का ऐतिहासिक परिपेक्ष"

श्यामली फौजदार (शोधकर्ता)

इतिहास विभाग

सिदो–कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका (झारखण्ड)

डॉ॰ मो॰ रिजवान (सहायक प्रध्यापक)

जामताड़ा महाविद्यालय

सिदो–कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका (झारखण्ड)

1. सार :

किसी भी सभ्यता की आत्मा को समझने तथा उसकी उपलब्धियों एवं श्रेष्ठता का मुल्यांकन करने का सर्वोपरी आधार उस काल की स्त्रियों के दशा का अध्ययन करना हैं। स्त्रियों की दशा किसी भी सभ्यता या संस्कृति का मापदंड माना जा सकता है। हॉलाकि भारत में स्त्रियों का इतिहास अत्यन्त गतिशील रहा है। इस लेख के माध्यम से मुगलकालीन शाही स्त्रियों की सामाजिक व आर्थिक क्षेत्र में निभाई गई भूमिका तत्थों की रीति–रिवाज में परखने की चेष्टा की गई है। मुगल बादशाहों द्वारा महिलाओं के प्रति उनका आचरण, व्यवहार, आदर, सम्मान एवं सहानुभूति की समीक्षा करने का प्रयास किया गया है।

वस्त्र उद्योग, कृषि, व्यापार एवं वाणिज्य , वित्तीय प्रबंधन एवं संचालन में महिलाओं की भूमिका के योगदान का तत्थों के आधार पर आँका गया है। इस लेख द्वारा पर्दे के पीछे ही सही मायने पर महिलाओं द्वारा नारीवाद की 'लौ' को जलाने की प्रयास की निर्णायक रखा गया है।

कुँजी शब्द :– दहेज प्रथा, पर्दा प्रथा, बहुविवाह, शैतानपुरा, जौहार, जागीर, परगणा, वस्त्र उद्योग, मनसब, वाणिज्य ।

2. प्रस्तावना :

मुगलिया साम्राज्य में नारियों के लिए स्वतंत्र रूप से जीवन का आनन्द लेना एक चुनौती थी। फिर भी इस साम्राज्य की स्थापना का श्रेय जहाँ जहीरूद्दीन बाबर को माना जाता है और इसे सुदृढ़ और विस्तार के साथ प्रशासनिक सबलता प्रदान करने का श्रेय अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ एवं औरंगजैब जैसे महान शासकों को हैं, पर इन शासकों के सफलता के पीछे एक गौण शक्ति का योगदान रहा जिसे इतिहास कभी भूल नहीं सकता ।

मुगलकाल में महिलाएँ बन्द परिवेश में रहते हुए भी उनके द्वारा सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्रों में निभाई गई भूमिका ने समकालीन समाज को सकारात्मक, महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान दिशा और दशा का निर्माण किया। अपनी विवेक, व्यवहार, आचरण एवं सूझबूझ से धीरज, लगन, सचेतन एवं दूरदर्शिता का उपयोग

कर अपनी नई पहचान के साथ–साथ पद प्रोन्नती प्राप्त करने का मार्ग भी प्रशस्त किया। पद प्रोन्नति उन दिनों आंशिक स्वतंत्रता एवं स्वच्छन्दता का मानक हुआ करता था।

साक्ष्यों पर आधारित यह लेख इस तत्थ को और भी प्रबल बनता है, कि महिलाओं की सामाजिक एवं आर्थिक प्रशसंनीय भूमिका साम्राज्य निर्माण में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनकी भागीदारी का द्योतक है।

3. साहित्यिक समीक्षा एवं विधि :

इस शोध पत्र में मुगलकालीन समाज के सामाजिक एवं आर्थिक पहल पर महिलाओं के क्रिया–कलाप का विश्लेषण करते हुए उनकी योगदान एवं तत्वमिमांसा की झलक एवं झाकियाँ का उल्लेख करने का प्रयास करेगें। यह लेख मुख्य रूप से प्राथमिक श्रोतों पर आधारित होगा। प्राप्त सामाजिक एवं आर्थिक श्रोतों का अध्ययन कर उन दिनों महिलाओं की इन श्रोतों में भूमिका की घटनाओं से प्रकाश में लाया जाएगा। दिलचप्स देखना यह होगा कि महिलाओं के उपरोक्त क्षेत्र में योगदान से साम्राज्य की आतंरिक एवं विदेशी प्रशासन एवं नीतियाँ पर कितना प्रभाव पड़ा और क्या यह प्रभाव मुगल साम्राज्य के लिए वरदान सिद्ध हुआ।

इस लेख को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए हमने फारसी के अनुवादित प्राथमिक श्रोतों, समकालीन विदेशी यात्रियों का यात्रा वृतांत, समकालीन यूरोपीयन अभिलेख एवं शासकीय पक्ष पुरातात्विक श्रोत एवं द्वितीयक श्रोत का सहारा लिया।

4. विचार विमर्श :

मुगल साम्राज्य में सामान्यतः महिला बादशाह की माँ या मुगल रानी हुआ करती थी। सभी बादशाह अपनी माँ या मुगल रानी का आदर व सम्मान करते थे। बाबरनामा एवं हुमायुँनामा के अध्ययन से ज्ञात होता है, कि बादशाह अपने शपथ ग्रहण, बच्चों का जन्मदिवस या उत्साह पूर्ण उत्सव से पहले अपने माँ का दर्शन एवं परामर्श लिया करते थे। [1] बादशाह के माँ के मृत्योपरान्त ही उनकी मुख्य रानियों में कोई उसका जगह लेता। अकबर के प्रशासन में उनकी माँ के पारित आदेश में यह शब्द शामिल होता था। जैसे – ''हुक्म–ए–मरियन जमानी'' और उसपर एक फूल के साथ आठ पंखुड़ियाँ की मुहर लगती थी।[2] अकबर के राजदरबार में हमिदा बानो एक सक्रिय एवं प्रभावशाली की भूमिका में नजर आती है। उनका आदेश गुलबदन बानो से ऊँचा एवं गरिमामयी था। हमिदा बानो बेगम ने कई बार पारिबारिक भोज समारोह का आयोजन किया एवं बादशाह पुत्र मतभेद में मध्यस्थता भी निभाई। [3]

एक बार नदी पार कराने हेतु अकबर ने खुद उसकी पाल्की का एक छोर पर कंधा दिया।[4] जहाँगीर ने तो अपनी माँ की प्रशंसा करते हुए लिखा कि उस दिन मेरी माँ''मरियमउज जमानी, आगरा आकर मेरे रूहानी तन्दुरूस्ती के लिए दुआ की।'' [5]

राज दरबार में मुगल परिवार के बेटियों या शाहजादियों का उच्च रूतवा था और उनकी प्रतिष्ठा का आदर सम्मान हुआ करता था। उन दिनों बेटी के जन्म को उसी हर्ष–उल्लास के साथ मनाया जाता। [6] बेटियों की शिक्षा एवं उच्च प्रतिभा की निखार के लिए बेहतर प्रबंध किया जाता था।

मुगल हरम में आया को सम्मान एवं प्रतिष्ठित पदों पर रखा जाता था। अकबर की बचपन में परवरिश उनकी सौतेली माँ महम अन्गा ने किया जिसने अकबर के प्रारंभिक दिनों में महत्वपूर्ण राजनैतिक भूमिका निभाई। कुछ अन्य मुगल आया (दाईयाँ) जिसका महत्वपूर्ण प्रशासनिक व्यवस्था में योगदान रहा जिनमें कुछ विरूपात रहा । उनमें भी जीजी अंगा, कोकी अंगा, पिजी जन अंगा इत्यादि।[7]

मुगल हरम की प्रतिष्ठित स्त्रियाँ इस्लामिक रीति–रिवाज को अपनाते हुए अपनी सभी प्रकार की भूमिका को निभाती थी। परदा का प्रचलन जोरों पर था। परदा का अर्थ मुख्य रूप से नकाव या ढकना हुआ करता था। किशोरियाँ अपनी परिपक्क पर इसे अपनाती थी। सार्वजनिक स्थलों पर गरीब या फिर निर्लज औरतें ही जाया करती थी । मुस्लिम मर्दों को यह नापसन्द था कि उनकी स्त्रियों का चेहरा कोई ओर मर्द देखे , भले ही उसमें उसका व्यस्क भाई क्यों न हो।[8] बाहर जाते समय औरतें परदे का पालन करती थी। [9] आदेश था कि अगर औरतें सड़कों और गलियों पर वेपरदा नजर आई तो उन्हें वैश्यालय भेज दिया जाएगा।

उच्च वर्ग की हिन्दू महिलाएँ भी परदा प्रथा को गंभीरता से अपनाती थी। लगभग सभी हिन्दू जाति और वर्ग की महिलाएँ परदा के समान ही चेहरे पर घुंघट का प्रयोग करती थी। [10] हॉलाकि घुंघट का रिवाज मुस्लिम आने के पहले से ही प्रचलित था। [11]

विवाह सम्बन्धित कोई उम्र की तय सीमा नहीं थी। सामान्य तौर पर हिन्दू–मुस्लिम समाज में विवाह कम उम्र में ही कर दी जाती थी। चूँकि गरीब घराने बच्चियों की पढ़ाई–लिखाई का कोई ठोस प्रबन्ध नहीं था जिसके कारण शादियाँ 7–8 वर्ष की उम्र में ही कर दी जाती थी। [12] शहरों और उच्च वर्ग की लड़कियों की शादी 12–13 वर्ष की आयु में कर दी जाती थी। [13]

निकाह काजी द्वारा किया जाता था और उसका एक अभिलेख (record) या दस्तावेज सुरक्षित रखा जाता था। मुस्लिम विवाह में मेहर जो दुल्हन को देय था की महत्वा थी जिसे शादी से पूर्व तय किया जाता था। [14] विवाह सम्पन्न करने के लिए निकाह के समय दो गवाहों की जरूरत होती थी और मुख्य विवाह अवसर रूखसती के समय मनाया जाता था। [15]

बाल–विवाह एक सामान्य प्रथा था। ज्यादातर राजकुमारियों की शादी 16 वर्ष की उम्र उपरान्त ही होती थी। बाबर के बेटी गुलरंग, [16] गुलबदन बानो का विवाह , [17] आरजूबंद बानो की शादी [18] बाल विवाह का उदाहरण है । अकबर का मानना था कि बाल विवाह से स्त्रियों को शारिरिक, मानसिक विकास में बाधा आती और घर–द्वार फल–फूल नहीं सकता था। इसलिए उनके अनुसार लड़कियों की शादी 14 वर्ष और लड़कों के लिए 16 वर्ष का उम्र को सही माना है। [19] बावजूद कठोर नियम कानून लागु करने पर भी अकबर का बाल विवाह पर रोकथाम का प्रयास नाकाबिल सिद्ध हुआ। दहेज की प्रथा भी मुगलकाल में प्रचलित था। कभी–कभी माँ–बाप अपनी बेटियों की विवाह सुखी–सम्पन्न परिवार या फिर काबिल वर का विवाह मेल बनाने के लिए काफी दहेज सुपुर्द करते थे। कभी दहेज प्रथा के कारण बेटियों का विवाह संकटमय बन जाता था। [20] अकबर ने इस प्रथा का विरोध किया जबकि ब्राह्मण दहेज के लेन–देन से दूर था। [21]

तलाक (विवाह बिच्छेद) :– प्रायः यह देखा जाता है, कि जब पति–पत्नी एक दूसरे का साथ नहीं निभा पाते और रिश्तों में तकरार आ जाती है, तो हर सम्भव प्रयास किया जाता है, कि दोनो के बीच बड़ती दूरियाँ मिटाई जाए और मिलनसार जीवन व्यतीत करें और जब यह प्रयास भी असम्भव होता है, तो कानूनन वे अलग हो जाते है और फिर से जीवन साथी चुनकर जिन्दगी की शुरूआत करते है। विवाह विच्छेद का प्रचलन हिन्दुओं में न के बराबर था, लेकिन निम्न जातियों में शादी और विवाह विच्छेद का एक सामान्य नियम बन चूका था। इस्लाम में विवाह विच्छेद का अनुमति है, क्योंकि शादी एक सामाजिक समझोता है, न कि ईश्वरीय आदेश इसलिए विवाह बन्धन को समझोता कर सकता है। विवाह को आसानी से तीन तलाक क्रमवार कहने पर पति–पत्नी को विच्छेद कर सकता है। [22]

पत्नियाँ भी पति को छोड़ सकती है, पर उसे मेहर आपस देना पड़ता था। इसे ''खुला'' कहा जाता था। [23] तलाक को मुस्लिम में सामान्य माना जाता था पर इसे हीन भावना से देखते थे। मुगल काल में पति को तलाक देने का अधिकार जोरों पर था और पत्नी की रजामंदी के बगैर भी दिया जाता था।

अकबर के जमाने में सैफ खान ने कहा था कोकी कि माँ को उसके पति ने धमकी दी थी कि अगर वह बच्ची को जन्म देगी तो वह तलाक दे देगा। [24] पर उसे बेटा हुआ और तलाक टल गया । जहाँगीर ने जारूल्लाह को उसकी बेगम मिस्री बेगम को तलाक देने को कहा क्योंकि उसे उसके साथ मानसिक प्रताड़ना हो रहा था। [25] गुलबाग बेगम की शादी भी मीर शाह हुसैन से हुई पर रिस्ते में अन–बन के बजह से तलाक हुआ। [26] इसमें यह स्पष्ट हो जाता है कि रिस्ते न चलने की गुंजाईश पर तलाक हो जाता था।

बहुविवाह :– यह प्रथा हिन्दू और मुस्लिम दोनों में प्रचलित था। सामान्यतः पति–पत्नी का जोड़ी ही संतोषजनक था पर जिसका आर्थिक स्थिति अच्छी थी वह अपनी आन–बान–शान को बनाए रखने के लिए कई पत्नियाँ रखा करता था। इस्लाम में चार पत्नियाँ को रखने की अनुमति है पर सभी पत्नियों के साथ समानता का व्यवहार हो। [27]

अबुल फजल हिन्दुओं के बारे में लिखता है, कि महाराजा (सम्राट) को छोड़कर सभी को एक ही पत्नी रखनी चाहिए और बहु–विवाह भी संभव है, जब पति या तो बिमारी से ग्रसित हो, बॉझ हो या फिर जन्मा नवजात शिशु मर जाता हो। [28] बाबर के पास सात पत्नियाँ थी। [29] हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर सभी ने बहु विवाह किया और अनेकों बिबियाँ को अपने हरम में सम्मानित पदों या मनसब पर रखा। [30] हॉलाकि अकबर एक पत्नीत्व का पक्षधर था। उसका मानना था कि वहुविवाह से स्वास्थ्य एवं शांति दोनों नाश होता है। [31] बदायूनी लिखता है, कि एकल विवाह पर अकबर ने कानून भी बनाया बाबजूद सामाजिक सुधारों का प्रयास चलता रहा पर बहुविवाह का प्रचलन रोका न जा सका। [32]

विधवा :– समाज के पति का मृत्यु निःसंदेह उसकी पत्नी के लिए सबसे बड़ा पीड़ादायक एवं शोक की घड़ी हुआ करता था। हिन्दू औरते या तो सन्यासी जीवन व्यतीत करती या फिर सती। मुस्लिम महिलाओं को धार्मिक आधार पर दूसरी शादी का अनुमति था और निम्न वर्ग के लोग जैसे– ग्वाला, घोबी, माली, मछुआरे इस प्रथा को मानते थे। [33] लेकिन अल्तेकर का मानना है कि हिन्दुओं में तलाक की गुजाईश ही नहीं थी चाहे पति चरित्रहीन हो या क्रूर। [34]

मुगलकाल में मुगलों ने विधवा विवाह में प्रोत्साहित किया हॉलाकि अकबर ने हिन्दू रीति रिवाज के विरूद्ध जाकर इस प्रथा पर बल देते हुए कानुन स्थापित किया।[35] औरंगजेब ने दारा शिकोह के मरनोपरान्त उसकी बीबी राना–ए–दिल से शादी की इच्छा जताई पर सफल नहीं हुआ। उसके बाद राना–ए–दिल को पूरी जिन्दगी एक प्रतिष्ठा एवं सम्मान के साथ देखा जाने लगा जिसकी वह हकदार थी।[36]

सती :– माना जाता है कि भारत में सती एक प्राचीन प्रथा और रिवाज रहा है। सती का अर्थ ''निश्चित रूप से पती का मृत्योपरान्त पति से पुनः मिलना'' या पुनःमिलन। इस पुनःमिलन की प्रक्रिया में एक विधवा को अपने पति के साथ चिता में जिन्दा ही जल जाना पड़ता था। ऐसा न करने पर उसे पूरी जीवन पारिवारिक सदस्यों द्वारा उसे हीन लक्षण और घृणा की चुनौती से गुजरना पड़ता था। इसलिए पति के चिता में उन्हें जबरण ढकेला जाता ताकि जिन्दा जलते हुए अपने पति के साथ स्वर्गलोक सिधार लें। [37] अकबर बादशाह ने एक आदेश पारित किया कि अगर कोई पत्नी अपने पति के चिता पर जलना चाहती है, तो उसे न रोका जाए लेकिन उसपर किसी प्रकार का बाहरी दबाब या बल का प्रयोग न हो। [38]

जहाँगीर और औरंगजैब ने किसी भी औरत को अपने पति के चिता में जलने के पूरा विरोध करते हुए आदेश पारित किया था। [39]

जौहार :– बहादूर और साहसी राजपूतों में जौहार की प्रथा का प्रचलन था। जब राजपूत के सेनापति को यह ज्ञात हो जाता कि हम सैन्य युद्ध में हार जाऐंगे तो अपने परिवार और बच्चों को किले के अन्दर या कियी गुफा में बंद कर आग लगा देते। इस परम्परा को जौहार कहा जाता था। [40]

राजपुत युद्ध के मैदान में समर्पित करना नहीं जानते उनका विश्वास या तो जीत में था या फिर वीरगति प्राप्त करने में । जौहार प्रथा को अपनाने के पीछे मूल भावना था कि वह अपने महिलाओं और बच्चों को दुश्मनों के हाथों प्रताड़ित होते नहीं देखना चाहते थे। अबूल फजल ने चितौड़ में जौहार का वर्णन करते लिखा है कि ''जब युद्ध में कोई अटल मुसीबत या खतरा या हार सामने आता दिखे तो एक पिठी चन्दन के लकड़ी की बनाई जाती जो बहुत बड़ा होता, उस पर सूखी लकड़ी और तेल डाल दिया जाता।'' जिससे महिलाएँ व बच्चे जलकर राख हो जाए। [41] इस प्रकार अपनी शान और औरतों की प्रतिष्ठा और गरिमा को बचाने के लिए राजपूतों ने इस प्रथा को अपनाए रखा।

शैतानपूरा :– मुगल बादशाहों ने विशेष रूप से अकबर और औरंगजैब की वैश्याओं के विरूद्ध कड़ा कदम उठाया। शहर के बाहरी छोर पर अकबर ने वैश्याओं के लिए क्षेत्र अंकित किया जिसे ''शैतानपूरा'' कहा जाता था ताकि बाकी शहरी वैश्यालयों और नग्नता से दूर रहे। [42] इसका संचालन के लिए रक्षक एवं सचिव की नियुक्ति होती थी। वैश्याओं के हरकत पर कड़ा नजर रखता था। आदेश पालन न करने पर कड़ा सजा भी दी जाती थी।

मीना बाजार (Fancy Market) :– मुगल बादशाहों ने हरम में रह रहे शाही महिलाओं के मनोरंजन और आनन्द के लिए अपनी रूची अनुसार मेले, बाजार एवं उत्सव का आयोजन किया करते थे। उनके मन बहलाव के लिए सप्ताह में किसी एक दिन को 'खुशरोज' मेला का आयोजन महल के प्रांगन में होता था। इस 'खुशरोज' मेला के संचालन का भार सिर्फ औरतों के जिम्मे होता था। बादशाह और ऊँचे मनसब के दरबारी ही इस मेले में आकर आनन्द ले सकते थे। यह सार्वजनिक बाजार नहीं होता।

मीना बाजार मूल रूप से शाही महिलाएँ, शाहजादियाँ और रईस दरवारियों के लिए आयोजित होता था। इसमें व्यापारियों की भी पत्नियाँ एवं बेटियों द्वारा अलग–अलग वस्तुओं के अलग–अलग दुकान लगाया जाता था। कपड़े, जेबरात, हस्तशिल्प, फल–फूल एवं खाने–पीने का सामान मुख्य रूप से होता। इसलिए सोनार, बनिया एवं वस्त्र व्यापारियों की पत्नियाँ इसका संचालन करती। यह फैन्सी मीना बाजार जोधाबाई महल से लेकर मीना मस्जिद फतेहपुर तक फैला होता। सभी शाही महिलाएँ एवं राजपूत घराने की महिलाएँ भी इस बाजार से लुफ्त उठाती और अपना मन बहलाती। बाजार का प्रारंभ सबसे पहले भारत में हुमायूँ ने किया। जहाँगीर ने तो इस बाजार में रौशनी का प्रबन्ध कराने का आदेश दिया। बादशाह यहाँ नृत्य एवं संगीत का भी आनन्द लेते थे। नृत्की को कंचनी कहा जाता था। शाहजहाँ ने इसे और भी शानदार बना दिया। अकबर काल में यह आये दिनों आयोजन होता था, जिसमें खान–पान, मनोरंजन, गीत–संगीत के साथ नृत्य की भी आनन्द लिया जाता था।

महिलाओं की आर्थिक सहभागिता :– मुगलकालीन महिलाओं ने अपनी सहभागिता आर्थिक क्षेत्र में प्रदान कर विकसित होते मुगल आर्थिक परिस्थिति को और भी शक्तिशाली बनाया । महिलाओं की भागीदारी कृषि, उद्योग एवं मुद्रा प्रणाली भी कसौटी में आँका जा सकता है।

शाही महिलाओं को जागीर आवंटित की जाती थी जिससे उनको कर प्राप्त होता था। निश्चित ही अपने जागीर के कृषक एवं प्रशासनिक उत्थान एव ंकर उत्सर्जन के लिए स्वंय उत्तरदायित्व होती थी।

नौपरिवहन व्यापार, अन्तर्देशीय एवं वैदेशिक वाणिज्य में भी महिलाओं की भागीदारी रही। जहाँगीर की माँ मरियमउजमानी प्रथम शाही महिला थी जिसने अन्तरदेशीय एवं वैदेशिक व्यापार वाणिज्य का संचालन किया ।[43] जहाँआरा वाणिज्य व्यापार के लिए साहेबी एवं गुन्जावर जैसे दो बड़े जहाज की मालिक थी।

[44] नूरजहाँ, जहाँआरा ने इस व्यापार वाणिज्य को पूरा बढ़वा दिया । वाणिज्य व्यापार को उन्नति के लिए अच्छीबल, दिल्ली, लाहौर एवं चाँदनीचॉक जैसे बाजार को विकसित किया। [45] उस दौर की स्त्रियाँ उद्योग निर्मित वस्तुओं पर भी अपना प्रभूत्व रखती थी। सूती कारखानों में अपने पहनावे के लिए रंग–विरंगे और मनपसन्द कपड़ों का निर्माण आयात और खपत पर भी ध्यान रखती थी।

उपहार, पुरस्कार एवं भेंट में मिले सोना, चाँदी, हीरे अनमोल आभूषणों का रख–रखाव, देखभाल एवं व्यापार के माध्यम से आयात–निर्यात का उत्तरदायी भी बखूबी निभाती थी।[46] जहाँगीर की बेगम जगत गोसाईं ने ''सोहागपुरा'' गाँव ही बसा डाला जिसमें सिर्फ सुन्दर और मनमोहक चुड़ियों का निर्माण होता था। [47]नूरजहाँ ने कई सारे बाजार एवं सराई का निर्माण किया एवं अपने नाम के सिक्के का भी प्रचलन किया।

5. निष्कर्ष :–

मध्ययुगीन भारत के मध्यकालीन अध्ययन से प्राप्त ज्ञान के आधार पर यह माना जा सकता है, कि पितृसत्ता गहराई से जड़ जमा चुकि थी। महिलाओं के शरीर अधिकार और सोच पर कड़े प्रतिबंध लगाए गए थे। यह भी देखा गया है, कि महिलाओं की दशा में धर्म, जातियाँ और क्षेत्रों पर भिन्नता थी। मुस्लिम और निम्न जातियों के समुदायों के बीच महिलाओं की स्थिति बेहतर थी हॉलाकि पहले से भी पितृसत्ता के कानूनों के अनुसार संगठित था। यह और बात है कि, उन दिनों अनैतिहासिक छवियाँ हमारी चेतना पर शासन करती थी फिर भी महिलाओं ने इन दूर्भावनाओं को चुनौती समझदार परदे के पीछे रहकर ससमय अपने अधिकार एवं जीवन की बली चढ़ाकर अपने मान, मर्यादा, गरिमा और सूझबूझ का एक परिपक्य उदाहरण अपनी पीढ़ियों को सौपा है, जो आज भी इस संघर्ष को नारीवाद एवं महिला सशक्तिकरण की मशाल को जीवित रखा है।

Refererances:

1. Gulbadan Begam, Humayunnama ,Eng. Tr. By Annettc S.Beveridge London, Royel Asiatic society, 1902. Page-95.
2. S.A.I. Tirmizi Edicts from the Mughal Harem, Delhi, idarah-i-Adbiyat-1,2009. Page-xix-xx
3. Rume Godden, Gulbadan, New York, Viking Press,1981 Page 148-150
4. Thomas Coryat, Early Travel in India (1583-1619), Foster William (ed) London, Humphrey MILford, Oxford University Press,1921, Page 278
5. Nur-ud-din Muhammad Jahangir, Tuzuk-i-Jahangiri Eng.tr. by Alexander Rogers, Henry Beveridge, Low Price Publication, 2006, vol. II page 68
6. Abul Fazal, Akarbarnama, English translate by H.Beveridge, New Dew Delhi Ess Publicatin 1979, vol ii page 509
7. Gulbadan Begam,P. 182 & Ruby Lal, Early Mughal World, New York, Cambridge University Press 2005 , Page 192
8. Niccola Manucci, Storia-do-Mogor .Eng. translate by William Irvine, London: John Muurray, Albemanle street Govt. of India, 1907, vol. ii page 352
9. Alexander Hamilton, A new Account of the East Indies, London, 1739, New Delhi 2nd ed. Educational services, 1995, vol I page 163
10. Abdul Qadir Badauni, Mumtakhab-Ul-Tawarikh Eng tr. by W.H.Lowe, Delhi, Idarah-i-Adabiyat 2009, vol ii page 405
11. P.N.Ojha, Glimpses of social life in Mughal India, New Delhi classical Publication 1979 page 62
12. S.C.Raychoudhury, Social Cultural and Economic History of India (Modern Period) New Delhi page 58
13. Ibid. page 59

14. Thomas Patrick Hughes , A Dictionary of Islam, New Delhi ,Cosmo Publication 2004 ,Vol ii page 447
15. Pushpa Suri, Social Condition in Eighteenth Century Northern India, Delhi University Publication Division, 1977, page 86
16. Manucci Vol iii page 58-59.
17. Gulbadan begam page-232
18. Ibid . page 231
19. Ibid . page 31
20. Abdul Qadir Badauni, Mumtakhab-Ul-Tawarikh Eng tr. by W.H.Lowe, Delhi, Idarah-i-Adabiyat 2009, vol ii page315
21. Msshkat Sharif, Urdu translate by Maulana Abdul Rahaman Kandhavi Karaehi Darul I shat vol ii page 110
22. Abul Fazal Ain-i-Akbari Page 288
23. Encylopedia Dictionary of Nadislal India (Mirat ul istilah) transl. by Tasneer Ahmed Delhi, Sundeep Prakashan-1993, Page 294
24. Abdul Qadir Badauni, Page 147
25. Abul Fazal Ain-i-Akbari Vol-I Page 375
26. Shah Nawaz Khan-Mathir-ul umara Eng. Tr. by H. Beveridge Revised by Beni Prasad, Patna, Janki Prakashan 1979, Vol-II Part II Page 819
27. Gulbadan begam, Humayunnama, page-230
28. Chopra Pal Some Aspects of society and culture, during the Mughal age 1526-1707 ,Agra 1955, Page 109.
29. Abul Fazal Ain-i-Akbari Vol-II Page 341.
30. Gulbadan begam, Humayunnama, page-28, 233
31. Abul Fazal Ain-i-Akbari Vol-I Page 321,322.
32. Ibid Page 288
33. Abdul Qadir Badauni, Mumtakhab-Ul-Tawarikh Eng tr. by W.H.Lowe, Delhi, Idarah-i-Adabiyat 2009, vol ii p-367
34. Meera Nanda ,Socio economic history of Mughals, Delhi Dicovery Pub. Twese 1987 Page 90
35. A.S.A.l tekar The Position of women in Hindu civilization ,culture Publication Honce B H U -1938, Page102
36. Nigam Daya Narayani, Tarikh-i-Hind, Page 41
37. Manucci Vol i page 361.
38. Father Monsemate -The Commentry , Eng. Tr.by J.S. Hoyland, Humphrey nilford Oxford University Press, 1922, Page 13.
39. Badaoni Muntakhab Vol II, Page 388.
40. Thavenot and Careri, Indian Travels Page 120
41. P.N.Ojha North Indian Social Life during Mughal period Delhi Oriental Publication Page 151
42. Abul Fazal, Akbarnama vol II, Page 472
43. Badaoni Muntakhab Vol II, Page 311,312
44. Abul Fazal Ain-i-Akbari Vol-I Page 287.
45. Peter Mundy, The travel in Asia 1628-1634 Hakluyt Socity, London ,Vol-II ,Page 238
46. Jahangir, Tuzuk-i-Jahangiri, Vol-II, Page 31
47. K.S.Lal , The Mughal Haram, Page- 166.
48. Abul Fazal Ain-i-Akbari Vol-I Page 287.

49. Jahangir, Tuzuki Jahangiri, Elison Banks Findly Nurjahan Empress of Mughal India ,New York, Oxford University Press, 1993,Page 111.
50. William Hawkins , Early Travel in India Humphrey MILford, Oxford University Press,1921, Page 98
51. Shzeen Moosvi, People Taxation and trade in Mughal India , New Delhi, Oxford University Press-2008, Page 258.
52. K.S.Lal , The Mughal Haram,Aditya Prakashan New Delhi 1988, Page- 96.
53. Ibid. Page 122.
54. William Hawkins , Early Travel in India Humphrey MILford, Oxford University Press,1921, Page 94
55. Soma Mukharjee, Royal Mughal ladies and their contribution Cyan Publishing House, New Delhi, 2001, Page 239
56. Pelsaert Francois, Jahangirs India,Low Publication Delhi-201